उन्मुक्त संवाद की अमोघ दृष्टि : स्याद्वाद

(डा. श्री विश्वास पाटील)

आर्य और अनार्य जातियों की संस्कृति के संघर्ष की कहानी वैदिक कालसे भी पुरानी है । उपनिषदों एवं बौद्ध तथा जैन ग्रंथों के अध्ययन से यह अनुमान लगाना आसान है कि ईसा पूर्व की छठी शताब्दी के आसपास का काल भारत में बौद्धिक बेचैनी, शंका-कुशंका तथा मानसिक कोलाहल का काल था । जीवन-मृत्यु, सृष्टि-ग्रहमण्डल, ईश्वर-अनीश्वर जैसे अनगिनत प्रश्न थे । भारत में आगे चलकर दर्शन की जो छह शाखाएँ विकसित हुईं, उनके मूल में भी यही बौद्धिक आन्दोलन था ।

वैदिक परम्परा वेदनिंदक को नास्तिक मानती थी । ईश्वर की सत्ता नकारने वाले को नास्तिक कहने की परम्परा तो बहुत बाद में चली । पाणिनि के कालतक भी परलोक की सत्ता को न माननेवाला नास्तिक कहलाता था । इस दृष्टि से देखनेपर हम यह मान सकते हैं कि न तो जैन या बौद्ध परम्परा ही नास्तिक है, क्योंकि दोनों मत परलोक की सत्ता को मानते हैं और दोनों मतों का विश्वास है कि विश्व वहीं पर समाप्त नहीं हो जाता, जहाँतक वह दिखलाई पड़ता है ।

वैदिक परम्परा के संदर्भ में बुद्ध और महावीर का नाम प्रचंड क्रांतिकारी के रूप में लिया जाना चाहिए । दोनों ने प्रचलित व्यवस्था के विरुद्ध बुलंदी भरे स्वर में क्रांति की घोषणा की । दोनों की दिशा एक थी – लेकिन शैली भिन्न ! बुद्ध घोर क्रांतिकारी, महावीर चरम समन्वयवादी । बुद्ध ने हिंसा को नकारा, यज्ञ की सत्ता को अस्वीकार किया, यहाँतक कि वेद और ईश्वर के अस्तित्व तक को झुठला दिया । महावीर ने मौलिक राह अपनायी । उन्होंने अनेकान्तवाद के रूप में समन्वय की चिन्तनधारा का सूत्रपात किया ।

महावीर की कार्यदिशा का स्वरूप यह है - "हाँ, हाँ, जहाँ खड़े होकर आप देख रहे हो, जीवन का वही रूप दिखाई देता है, जो आप कह रहे हो, पर देखने की एकमात्र जगह वही तो नहीं है जहाँ आप खड़े हो । लो, आओ मेरे पास और यहाँसे देखो कि आप जहाँ से देख रहे हो जीवन का वही सत्य नहीं है ।"

भारत में विविध धर्म - सम्प्रदायों का उदय - विकास हुआ लेकिन अहिंसा-विचार को जितना महत्व जैन धर्म ने दिया उतना किसीने भी नहीं दिया । जैन दर्शन शारीरिक, मानसिक अहिंसा के साथ बौद्धिक अहिंसा का भी आग्रही है । यह बौद्धिक अहिंसा ही अनेकान्तवाद है । अनेकांतवाद का दार्शनिक आधार यह है - "प्रत्येक वस्तु अनन्त गुण, पर्याय और धर्मों का अखंड पिंड है । वस्तु को तुम जिस दृष्टिकोण से देख रहे हो, वस्तु उतनी ही नहीं है । उसमें अनंत दृष्टिकोणों से देखे जाने की क्षमता है । उसका विराट स्वरूप अनंत धर्मात्मक है । तुम्हें जो दृष्टिकोण विरोधी मालूम होता है, उसपर ईमानदारी से विचार करो तो उसका विषयभूत धर्म भी वस्तु में विद्यमान है । चित्त से पक्षपात की दुरभिसंधि निकालो और दूसरे के दृष्टिकोण के विषय को भी सहिष्णुतापूर्वक खोजो, वह भी वहीं लहरा रहा है ।"

अनेकांतवाद जैनधर्म की वैचारिक क्रांति है, इससे वैचारिक सहिष्णुता और भावनात्मक एकता के साथ धर्मनिरपेक्षता के बीज अंकुरित होते हैं । 'अनेके अन्ताः धर्मा, यस्मिन् स अनेकान्तः ।' प्रत्येक पदार्थ अनेक विशेषताओं के कारण अनेकांत रूप में माना जाता है ।

अहिंसा और अनेकांत दोनों जैन संस्कृति के अद्भुत तत्त्व हैं । अहिंसा आचारपक्ष से संबंधित है जब कि अनेकान्त विचारपक्ष से जुड़ा है । अनेकान्त में 'अनेक' और 'अंत' ये दो शब्द आते हैं । 'अनेक' याने एकाधिक और 'अंत' याने दृष्टि ! इसे ही अनेकांतवाद, स्याद्वाद, अपेक्षावाद, कथंचिद्वाद आदि विविध नामों से जाना जाता है । इस सिद्धान्त की विशेषता यह है कि वह किसी पदार्थ के एक ही धर्म को एकांततः न स्वीकार कर उसके हरसंभव पहलुओं को आत्मसात कर चलता है । वह 'ही' के स्थानपर 'भी' के प्रयोग का आग्रही है । 'ही' एकांत है और 'भी' अनेकांत ! जैन धर्म की यह मान्यता है कि प्रत्येक पदार्थ अनंत धर्मात्मक है । वह अनन्त गुणधर्मों से युक्त है ।

जैन दर्शन ने ज्ञान का वर्गीकरण पाँच प्रकार से किया है - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यायज्ञान और केवलज्ञान ! अनेकांत एक ज्ञानात्मक उपलब्धि है - अनुभूति है, वह जब वाणी के माध्यम से प्रकट होती है तब - स्याद्वाद कहलाती है । स्याद्वाद में पदार्थगत विरोधी धर्मोंका तर्कसंगत समन्वय होता है । चित्त में निर्मलता आती है । वस्तु का सम्यक् बोध होता है । अभिव्यक्ति की नयी सरणियाँ जन्म लेती हैं । मन, चित्त, बुद्धि और वाणी की एकतानता का व्यक्त मनोहारी रूप ही स्याद्वाद है जो परम्परा से पुष्ट तो है ही, नए सन्दर्भों से सम्पृक्त होकर और भी नयी दीप्ति के साथ उजागर होते हुए दिखाई देता है ।

स्याद्वाद और अनेकांतवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । दोनों एक होते हुए भी उनमें सूक्ष्म अंतर है । अनेकांत है पदार्थों के यथार्थ स्वरूप को देखने - परखने की एक चिन्तनपद्धति, जब कि देखे - परखे हुए स्वरूप को व्यक्त करने की भाषापद्धति है स्याद्वाद ! अनेकांत एक दार्शनिक दृष्टि है, स्याद्वाद है उन्मुक्त संवाद की अमोघ भाषा ! अनेकांत में तमाम दर्शनों का अन्तर्भाव हो जाता है और स्याद्वाद उस सिद्धान्त का प्रतिपादन है । अहिंसा का विचारात्मक पक्ष अनेकांत है और इस चिन्तन की अभिव्यक्ति शैली का नाम स्याद्वाद है । "अनेकांतवाद

क्षुद्रादर मानव सदा, करता है उत्पात ।
जयन्तसेन अनुभव यह, सोच समझ कर बात ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का संबंध विचारों से है किंतु स्याद्वाद उस विचार चिन्तन को अभिव्यक्त करने योग्य अहिंसामयी भाषा शैली की खोज़ करना है, दार्शनिक मतभेदों और विरोधों का शमन करना है । वादी-प्रतिवादी दोनों को न्याय देना है । एक-दूसरे को टकराने से रोकना है । जटिल से जटिल उलझनों को सुलझाने की क्षमता रखना है ।'' अनेकांतवाद का आधार है नयवाद ! नय - याने पदार्थ के स्वरूप को सापेक्ष दृष्टिकोण से समझना, वस्तुगत अनन्त गुणधर्मों को समझना नयवाद में पदार्थ के यथार्थ स्वरूप को देखने परखने की सभी दृष्टियों और समस्त दर्शनोंका समावेश हो सकता है ।

स्याद्वाद का आधार - स्तम्भ है - सप्तभंगीवाद ! पदार्थगत धर्म सापेक्ष होते हैं अतः उनका विवेचन - विश्लेषण भी सापेक्ष होना बिल्कुल ही स्वाभाविक है । स्याद्वाद का सिद्धान्त जहाँ वस्तु के धर्मों का विवेचन - विश्लेषण करता है वहाँ सप्तभंगीवाद अनन्त धर्मात्मक वस्तु के हर धर्म का विवेचन करने की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया प्रस्तुत करता है । सप्तभंगीवाद स्याद्वाद का विश्लेषण प्रस्तुत करता है । वस्तु के यथार्थ स्वरूप के विवेचन - विश्लेषण में सात प्रकार के वचनों का प्रयोग हुआ करता है, प्रयोग हो सकता है, प्रयोग किए जा सकने की संभावना है । इस दृष्टि से उसके सात भंग या प्रकार या पद्धतियां हैं । वे निम्नप्रकार की हैं -

स्यात् अस्ति घट : – कथंचित् घट है ।

स्यात् नास्ति घट : – कथंचित् घट नहीं है ।

स्यात् अस्ति नास्ति घट : – कथंचित् घट है और नहीं है ।

स्यात् अवक्तव्य घट : – कथंचित् घट अवक्तव्य है ।

स्यात् अस्ति अवक्तव्य घट : – कथंचित् घट है और अवक्तव्य है ।

स्यात् नास्ति अवक्तव्य घट : – कथंचित् घट नहीं है और अवक्तव्य है ।

स्यात् अस्ति नास्ति अवक्तव्य घट :

कथंचित् घट है, नहीं है और अवक्तव्य है ।

एक प्रश्न का समुचित उत्तर विविध सात पद्धतियोंसे दिया जाता है । इस समूचे लोक की हरेक वस्तु के किसी भी एक धर्म के स्वरूप - प्रतिपादन में सात प्रकार के वचनों का प्रयोग होता है, प्रयोग किया जाता है, प्रयोग किया जा सकता है । यही 'सप्तभंगी' कहलाता है । प्रत्येक पदार्थ अनेकांतात्मक है और उसको प्रतिपादित करनेवाली निर्दोषात्मक भाषा पद्धति स्याद्वाद है । इस भाषामें निश्चयात्मकता है । कोई भी भंग अनिश्चयात्मक नहीं है ।

'स्याद्' का हिंदी पर्याय 'शायद' माना जाता है, जिससे यह ध्वनि निकलती है कि स्याद्वाद निश्चित ज्ञान का माध्यम नहीं हो सकता । इसी बात को लेकर शंकराचार्य, शांतरक्षित, रामानुज, राधाकृष्णन्, राहुल सांकृत्यायन, संपूर्णानंद आदि विद्वानोंने इस सिद्धान्त की कडी आलोचना की है । श्री. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्यजीने अपने 'जैन दर्शन' नामक ग्रंथ में स्याद्वाद की इन आलोचनाओंका जमकर खंडन किया है । महेंद्रकुमारजी 'स्याद्' शब्द का अर्थ 'शायद' नहीं मानते । उनकी मान्यता है कि ''प्राकृत और पालि में 'स्याद्' का 'सिया' रूप होता है । यह वस्तुके सुनिश्चित भेदों के साथ प्रयुक्त होता रहा है । कोई ऐसा शब्द नहीं है जो वस्तु के पूर्णरूप का स्पर्श कर सके । हर शब्द एक निश्चित दृष्टिकोण से प्रयुक्त होता है और अपने विवक्षित धर्म का कथन करता है । इस तरह, जब शब्द में, स्वभावतः विवक्षानुसार अमुक धर्म के प्रतिपादन करने की शक्ति है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि अविवक्षित शेष धर्मों की सूचना के लिए एक 'प्रतीक अवश्य हो, जो वक्ता और श्रोता को भूलने न दें । 'स्याद्' शब्द यही कार्य करता है । वह श्रोता को विवक्षित धर्म का, प्रधानता से, ज्ञान कराके भी अविवक्षित धर्मी के अस्तित्व का द्योतन कराता है । 'स्याद्' शब्द जिस धर्म के साथ लगता है, उसकी स्थिति कमजोर नहीं करके, वस्तुमें रहनेवाले तत्प्रतिपक्षी धर्मकी सूचना देता है ।''

चिन्तन की अहिंसामयी प्रक्रिया का नाम अनेकांत है और उस चिन्तन को अभिव्यक्त करने की शैली कहलाती है स्याद्वाद ! अर्थात् अनेकांतवाद का संबंध मनुष्य के विचार से है, किन्तु, स्याद्वाद उस विचार के योग्य अहिंसायुक्त भाषा की खोज करता है । स्याद्वाद के अनुसार सच्चा अहिंसक यह नहीं कहेगा कि 'यह सत्य सिद्धान्त है ।' वह यही कहेगा कि 'स्याद् यह सत्यसिद्धान्त है ।'

'स्याद्वाद' नाम के साथ वाद जुड़ा है जो अंग्रेजी ISM का पर्यायी है । मैं स्वयं स्याद्वाद को वाद नहीं - संवाद मानता हूं । इसमें वाद-विवाद छूट जाते हैं । हितकारी संवाद, समन्वयात्मक अभिव्यक्ति और 'सर्वेषां अविरोधेन ।' दृष्टि का परिचायक यह तत्त्व है । उन्मुक्त संवाद है इसमें ! सबके साथ, सब को लेकर, सबतक पहुंचने की संवादपद्धति है यह स्याद्वाद ! हम अपने कोषोंतक ही सीमित न रहें, ज्ञान की - अभिव्यक्ति की हर संभव जितनी पद्धतियाँ, प्रणालियाँ, सरणियाँ हो सकती हैं उनका सुकरता से स्वागत, सत्कार और स्वीकार करें यही इस दृष्टिकी विशेषता है ।

शेष भाग (पृष्ठ ७२ पर)

डॉ. विश्वास पाटील
एम.ए., पी.एच.डी.

हिंदी, मराठी में आधा दर्जन से अधिक ग्रंथों का लेखन व सम्पादन । हिंदी, मराठी, गुजराती से अनुवाद कार्य भी । सिद्धहस्त लेखक, कुशल प्राध्यापक । साहित्यिक मित्रो के एक वर्ग से निरंतर संपर्क ।
सम्प्रति - स्नातकोत्तर हिंदी विभागाध्यक्ष, शहादा महाविद्यालय, शहादा.
संपर्क : डॉ. विश्वास पाटील, ३४ ब. कृष्णाम्बरी, सरस्वती कॉलोनी, शहादा (धुलिया) महाराष्ट्र - ४२५ ४०१.

क्षुद्र हृदय के मनुज से, कभी न करना प्रीत ।
जयन्तसेन निज हित की, यह है सच्ची रीत ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org